Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5532992

Roll No. 24029000612
Total Mark 56/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010701T - HINDI KAVYA KA ITIHAS

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4/5						
1B	4/5						
1C	4/5						
1D	4/5						
1E	3/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	3/5						
2	12/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	10/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam 23-12-24 Shift I Room No. 21

Paper Code A010701T Subject HINDI Year/Sem I Sem

Name of Candidate SAHASTRANSHU MISHRA

Roll No. 2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

Signature of Candidate | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks

Total Marks in Words

A010701T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course MA HINDI

Session 2024-25 Year/ Semester I Sem

Subject Name HINDI

Medium English ○ Hindi ●

Paper Code
A 0 1 0 7 0 1 T

Exam Date
2 3 1 2 2 0 2 4

Name of Candidate
SAHASTRANSHU MISHRA

Father's Name
KAMLESH MISHRA

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 1

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 1

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex- Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
5532992

A010701T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number C S J M A 2 4 0 0 0 1 1 9 5 6 8

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 4 0 2 9 0 0 0 6 1 2

पेपर कोड Paper Code
A 0 1 0 7 0 1 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि उत्तर पत्रक के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method: ① ● ③ ④ | Incorrect Method: ✓ ✗ ◉ ⓪

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़े।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शु होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्य नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त पन्ना नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Sub Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no. corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

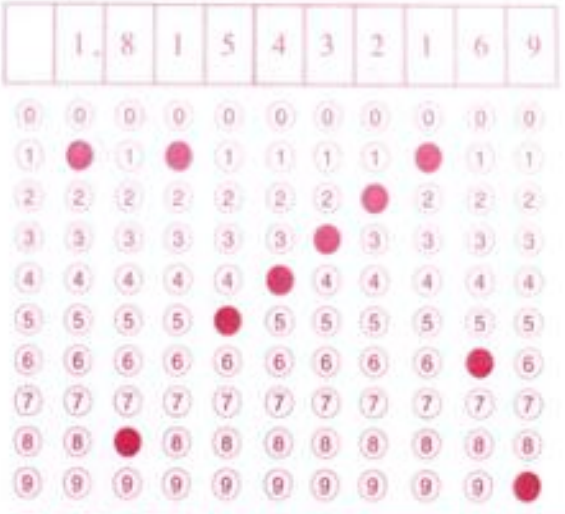

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

खण्ड-अ

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 1(A)

विद्यापति की भाषा

आदिकाल एवं भक्तिकाल की मजबूत कड़ी कहे जाने वाले विद्यापति भाषा के क्षेत्र में सिद्धहस्त थे। अवहट्ट हो या लोकभाषा अथवा देवभाषा संस्कृत। सभी भाषाओं में साहित्य सृजन करके विद्यापति ने सर्पूना की अविरल प्रवाहमयी धारा में अपना योगदान दिया है—'

अवहट्ट भाषा -

अवहट्ट आदिकाल की मुख्य भाषा रही है, अवहट्ट के साधन से विद्यापति ने
i) कीर्तिलता
ii) कीर्तिपताका।
नामक दो रचनाएं की।

देवभाषा संस्कृत -

संस्कृत के प्रकाण्ड

Do Not Write anything in this Portion

ज्ञाता विद्यापति ने संस्कृत में अधोलिखित रचनाएं की –

i) भू परिक्रमा
ii) लिखावली
iii) दान वाक्यावली
iv) दोहा वाक्यावली
v) पुरुष परीक्षा
vi) शान पत्तलक

लोकभाषा मैथिली –

लोकभाषा मैथिली में विद्यापति ने 'पदावली' की रचना की। पदावली इनकी सुप्रसिद्ध रचना है; जिसके [illegible] का भ्रम काफी समय तक [illegible]। विद्यापति भाषागत रूप में सिद्धहस्त साहित्यकार / कवि थे।

Paper Code

3

1(B)

पुनर्जागरण का साहित्य से संबंध -

'पुनर्जागरण' शब्द का अभिप्राय नये ज्ञान की प्राप्ति अथवा नवजागरण से है। जब कभी भी व्यक्ति / समाज / साहित्य तथाकथित सांचे की कैद से बाहर आकर नयी ऊर्जा के साथ नये तौर तरीके अपने सोपानों का निर्माण करता रहा है। तब-तब ऐसे काल को 'पुनर्जागरण अथवा नवजागरण कहकर सम्बोधित किया गया है।

साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण शताब्दियों से चली आ रही परम्परागत प्रवृत्तियों के बंधन से मुक्ति पाकर नये सृजन की गाथा एवं मंगलाचरण से है।

आदिकाल में आश्रयदाताओं का संरक्षण एवं यशोगान की प्रक्रिया में बंधे रहकर एवं भक्तिकाल में स्वयं स्वयं को असीम ईश्वर के प्रति समर्पित कर दिया। इसी प्रकार रीतिकाल में श्रृंगार ग्रन्थों के माध्यम से रसिकों में उन्माद जाग्रत करने वाले लक्षण

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

रूपों के पश्चात जब आधुनिक काल के आविर्भाव के साथ नयी सृजन धारा को पुनर्जागरण काल कहकर सम्बोधित किया।

भारतेंदु हरिश्चन्द की अगुवाई में प्रारंभ हुए आधुनिक काल ~~के चार~~ के काव्य को

- भारतेंदु युग
- द्विवेदी युग
- छायावादी युग
- प्रगतिवादी युग
- प्रयोगवादी युग
- नयी कविता
- समकालीन कविता

मे विभाजित किया गया है। पुनर्जागरण मे साहित्य सृजन के विषय, बिम्ब एवं शिल्प विधान आदि सबमें नवीनता एवं नव चेतना दृष्टिगत होती है।

1(c)

तुलसीदास की काव्यभाषा की संक्षिप्त टिप्पणी

लोकभाषा के कवि कहे जाने वाले; समाज की आदर्श अनुभूति के साकार रूप गोस्वामी तुलसीदास की काव्यभाषा उस सुरसरिता गंगा के समान है, जो अपने प्रवाह में जीवनदायी जलराशि के गुण इस प्रकार रखती है जो सबको समाहित कर पावन करते हुए बहती है।

अवधी भाषा में श्रीरामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास की युगपरिवर्तनकारी महाकाव्य है।

- दोहावली
- कवितावली
- विनय पत्रिका
- जानकी मंगल
- पार्वती मंगल
- रामलला नहछू
- वैराग्य संदीपनी
- बरवै रामायण
- हनुमानबाहुक

आदि ग्रंथों में तुलसीदास ने अपनी अनूठी

भाषा के माध्यम से लोक मंगल भावनाओं को प्रेषित किया है।

" लता बिटप मांगे मधु च्वाहिं
मन भावतो धेनु पय स्त्रवहिं ॥"

तुलसी की काव्य भाषा भी इसी प्रकार की है जैसी रामराज में प्रकृति एवं जीव जंतु। सर्वकालों में ऐसी सरल एवं सम्मोहनकारी भाषा, जिसमें कवित्त के अनेक प्रयोग दृष्टिगत हो सम्भव नहीं है। रस छंद, अलंकारों को देखकर तुलसी के लिए कहा गया है—

" कविता करके तुलसी न लसे,
कविता लसि पा तुलसी की कला।"

Do Not Write anything in this Portion

1(D)

सगुण एवं निर्गुण काव्य में अंतर –

भक्तिकाल में जब ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं अटूट प्रेम के दर्शन हो रहे थे तब सगुण एवं निर्गुण के नाम से दो प्रमुख काव्यधाराएं निकलीं, जो कि अधोलिखित स्पष्ट की गई हैं —

सगुण	निर्गुण
ये ईश्वर के साकार स्वरूप में विश्वास रखते थे।	ये ईश्वर के निराकार स्वरूप के समर्थक थे।
ये ईश्वर के साकार स्वरूप को अक्षुण्ण मानकर आराधना रत रहते थे।	ये साकार स्वरूप को भ्रम मात्र मानकर ईश्वर अनुराग में रहकर भक्ति करते थे।
सूरदास, तुलसीदास कवियों ने साकार	सूफी काव्य की परंपरा में तमाम कवियों एवं प्रेमरत

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

स्वरूप का परिपाक किया है।	• सूफी संतो ने निर्गुण -पासना पर बल दिया है।
• सगुण भक्ति में दास भाव, सखा भाव, सेवक भाव की प्रधानता है।	• निर्गुण भक्ति प्रियस्त प्रियतम के साथ ब्रह्म, जीव, जगत माया आदि का प्रभाव है।
उदाहरण " किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत मनिमय कनक नंद के आगन बिंब पकिरिबे धावत।"	उदाहरण "जल में कुम्भ है, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी फूटा कुंभ जल जलहि समाना यह तथ कथ्यो गियानी।"

Paper Code

9

1(E)

अष्टछाप का आशय

भक्तिकाल में जिन कवियों का जीवनी संचालक योगदान रहा है; उन कवियों में कुल आठ/अष्ट कवि आते हैं।

आठ कवियों में चार कवि वल्लभाचार्य के हैं, तो चार कवि उनके पुत्र विट्ठलनाथ के हैं।

वल्लभाचार्य के शिष्य
1) कुंभनदास
2) सूरदास
3) परमानंददास
4) कृष्ण दास

विट्ठलस्वामी के शिष्य
5) गोविंद दास
6) छीत स्वामी
7) चतुर्भुजदास
8) नंद दास

इन आठ कवियों के समुच्चय से अष्टछाप का निर्माण हुआ है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता आदि वार्ता ग्रंथों में साहित्य सृजन अद्भुत ढंग से किया गया है।

Paper Code

10

Do Not Write anything in this Portion

L(F)

रीतिकाल की काव्यधाराएं

आदिकाल एवं भक्तिकाल के पश्चात सन (1700 से 1900) के काव को रीतिकाल की संज्ञा दी जाती है; इसमें तीन प्रमुख धाराएं रही है।

i) रीतिबद्ध — ऐसे कवि जिन्होंने रीतिकालीन परिपाटी के अंतर्गत रचनाएं की है। इसमें केशवदास भूषण, मतिराम ~~बिहारी~~ आदि प्रमुख है।

केशवदास → रसिकप्रिया

ii) रीतिसिद्ध — रीतिसिद्ध कवियों की श्रेणी में बिहारी → बिहारी सतसई का सर्वोच्च स्थान है।

iii) रीतिमुक्त — घनानंद बोधा, आलम ठाकुर आदि कवियों ने स्वानुभूति को काव्य में प्रकट किया है।

घनानंद → सुजानहित

Paper Code

1(G)

बिहारी की बहुज्ञता का संक्षिप्त परिचय –

" मेरी भव बाधा हरौ
राधा नागरि सोई
जा तन की झाईं परत
स्याम हरित दुति होई "

सागर में गागर भरने वाले रीतिसिद्ध कवि हर क्षेत्र का व्यापक ज्ञान रखते थे। साहित्य, मनोवैज्ञानिक भाव, अलंकार प्रकृति चित्रण, ज्योतिष, औषधि विज्ञान, नक्षत्र ज्ञान, गणित आदि विषयों का ज्ञान इनके दोहों में स्पष्ट परिलक्षित होता रहता है।

इनके एक-एक दोहे के इतने विविध अर्थ निकलते है कि कहा जा चुका है –

" सतसैया के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगें, घाव करें गम्भीर ।। "

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

1(H)

छायावाद की तीन विशेषताएं –

i) रहस्यवाद का प्राधान्य

प्रसाद, पंत, निराला आदि कवियों के काव्य में रहस्यवाद का कोना दिखता रहता है – न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन

ii) प्रकृति चित्रण

प्रकृति का अति सूक्ष्म निरीक्षण व मानवीकरण छायावाद की विशेषता है
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट ऊषा नागरी।

iii) स्वानुभूति का वर्णन –

अपनी वेदना का वर्णन करते हुए काव्य सृजन महादेवी वर्मा की विशेषता रही है
मैं नीर भरी दुख की बदली
उमड़ी थी कल, मिट आज चली।

Paper Code

13

L(H)

प्रगतिवाद की तीन विशेषताओं का उल्लेख –

i) शोषितों का चित्रण

प्रगतिवाद में पहले सभी ढांचों को तोड़कर इस बार शोषितों एवं दुर्बल वर्ग का चित्रण किया गया।

ii) जनभावनाओं की अभिव्यक्ति

दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो सिंहासन खाली करो कि जनता आती है। जैसी कविताओं ने लोकतंत्र एवं जनता की भावनाओं को मजबूती से व्यक्त किया।

iii) नारी की प्रस्तुति

प्रगतिवाद में नारी की पुरानी तस्वीर 'आँचल में है दूध और आँखों में पानी' के स्थान पर 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी रचनाओं में नारियों की सशक्त छवि को प्रस्तुत किया।

Paper Code

खण्ड - ब

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 2

हिंदी साहित्य के इतिहास के नामकरण की समस्या

हिंदी साहित्य के इतिहास के नामकरण की समस्या तब उत्पन्न हुई जब हिंदी साहित्य के लेखन के साथ-साथ साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा का प्रारम्भ हुआ —

1839 — गार्सा-द-तासी ने फ्रेंच भाषा में 'इस्तवार द-ला-लित्येदुर एंदुई-एंदुस्तानी' इतिहास लेखन प्रारम्भ किया।

1883 — शिवसिंह सेंगर का 'शिवसिंह सरोज' का संकलन

Do Not Write anything in this Portion

1888- माडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान, जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा

~~1912~~ 1913 → 'मिश्रबन्धु विनोद' - श्याम बिहारी
- गणेश बिहारी
- शुकदेव बिहारी

1929- हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंद्र शुक्ल द्वारा

उपरोक्त समस्त इतिहास ग्रंथो में समय-समय पर यथा स्थान काल विभाजन एवं नामकरण किया जाता रहा, जिससे तत्कालीन नामकरणों की बहुलता हो, एक समस्या उत्पन्न हुई, सर्वाधिक मान्य प्रश्न आया कि

नामकरण का आधार क्या हो-

नामकरण के आधार के विषय में पक्ष निकलकर सामने आये
1) उस काल की प्रमुख प्रवृत्तियां जिनके केंद्र में कवियों तथा रचनाकारों ने सृजन किया एवं परम्परा को आगे बढ़ाया।

प्रथम

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

ii) इस काल के प्रमुख कवि जिसने कालजयी रचनाओं के माध्यम से धारा ही मोड़ दी।

सर्वमान्य पक्ष रीतियों अथवा प्रवृत्तियों का प्रकट व मान्य हुआ, तथापि कवि समय को भी प्रतिबिम्बित प्रकट हुआ, एवं नामकरण (सर्वमान्य इस प्रकार है)

i) आदिकाल / वीरगाथा काल
(~~1075~~ 1050 से 1375)

ii) पूर्वमध्य काल / भक्तिकाल
(1375 से 1700)

iii) उत्तरमध्यकाल / रीतिकाल
(1700 से 1900 ई.)

iv) आधुनिक काल / गद्य काल
1900 ई. से अब तक

यह दोहरा नामकरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की है; एवं सर्वमान्य है, इसके

अतिरिक्त कई अन्य नाम यथा

अलंकृत काल - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
चारण काल / बीज वपन काल / सिद्ध सामंत काल, आदिकाल के संबंध में प्रचलित रहे है।

इसी प्रकार विभिन्न साहित्यकारों ने साहित्य का नामकरण कर साहित्य विभाजन में अतुलनीय योगदान दिया है।

खण्ड-स

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

उत्तर सं० 9

प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं-

आधुनिक काल में भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद के पश्चात जिस युग का या काव्यधारा का प्रारम्भ हुआ उसे प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है। इस युग की कालावधि (1943-1950) ई० तक रही है एवं इस युग की विशेषताएं यथोलिखित है -

अतिवाचि[illegible] की व्यथा

इस युग दुखियों एवं असहायों की पुकार को स्थान दिया गया।

Paper Code

सशक्त नारियों का स्थान

बह तोड़ती पत्थर
इलाहबाद के पथ पर

नारी की ~~सशक्त~~ ~~सशक्त~~ सशक्त छवि
का चित्रण है।

शोषितों के प्रति सहानुभुति

सेरे चस्ते जूठे पत्ते
जब देखा मैंने नर कर को,
दयनीय स्थिति के प्रति विद्रोह

नवीन काव्य प्रतिमान

फावड़े और हल राजदण्ड बनेने को है।
नये शिल्प विधान रचे गये। नव अलंकारों
के प्रयोग से काव्य रचना की गई।

जनादेश की गूंज

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।
जन भावनाओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति की गई है।

Paper Code

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

मार्क्स का कम्युनिस्ट प्रभाव जिससे सबको समान स्थान पर लाने की चेष्टा की। प्रगतिवादी युग की प्रमुख विशेषताएं रही हैं।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

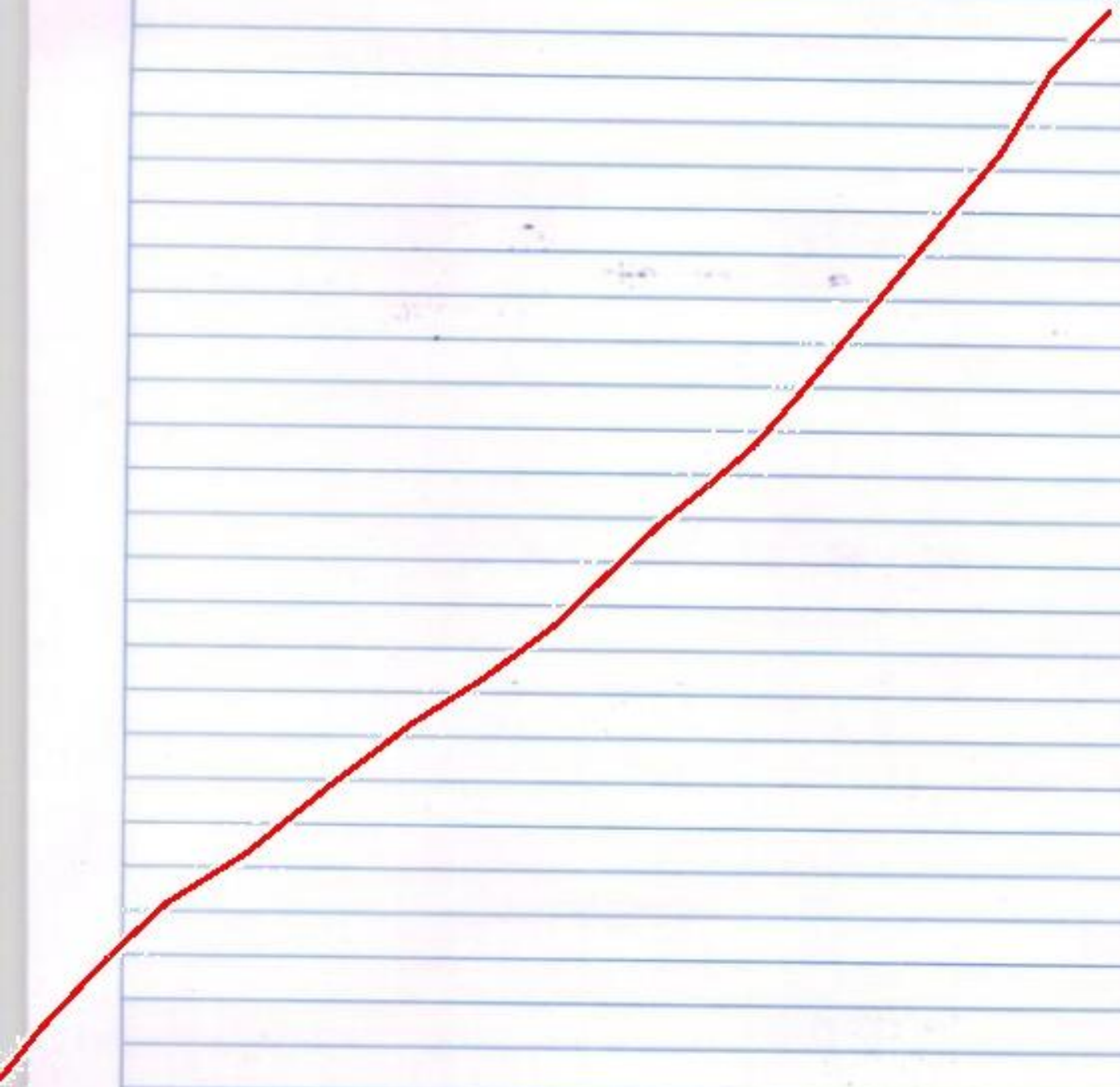

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

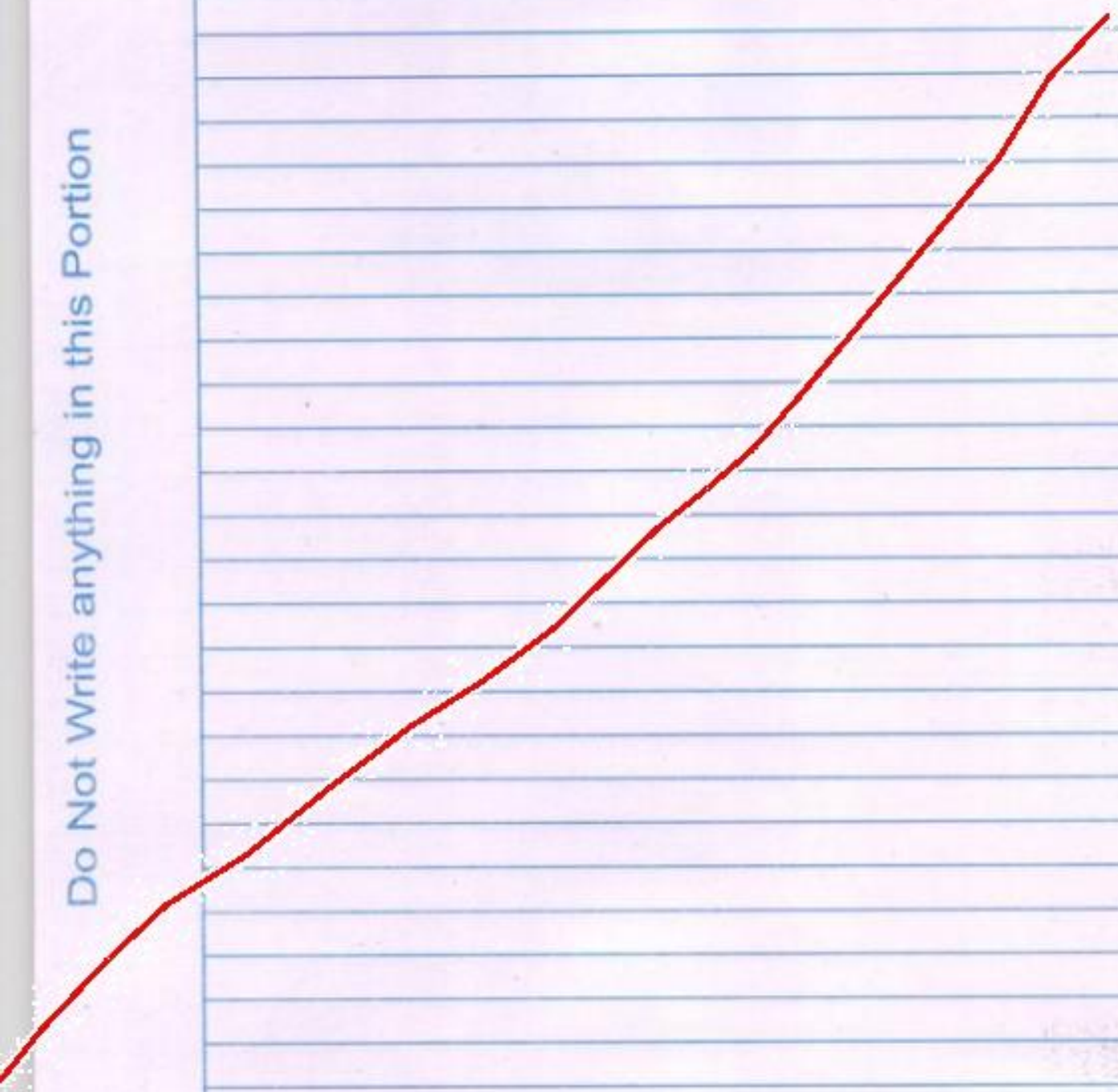

Paper Code

23

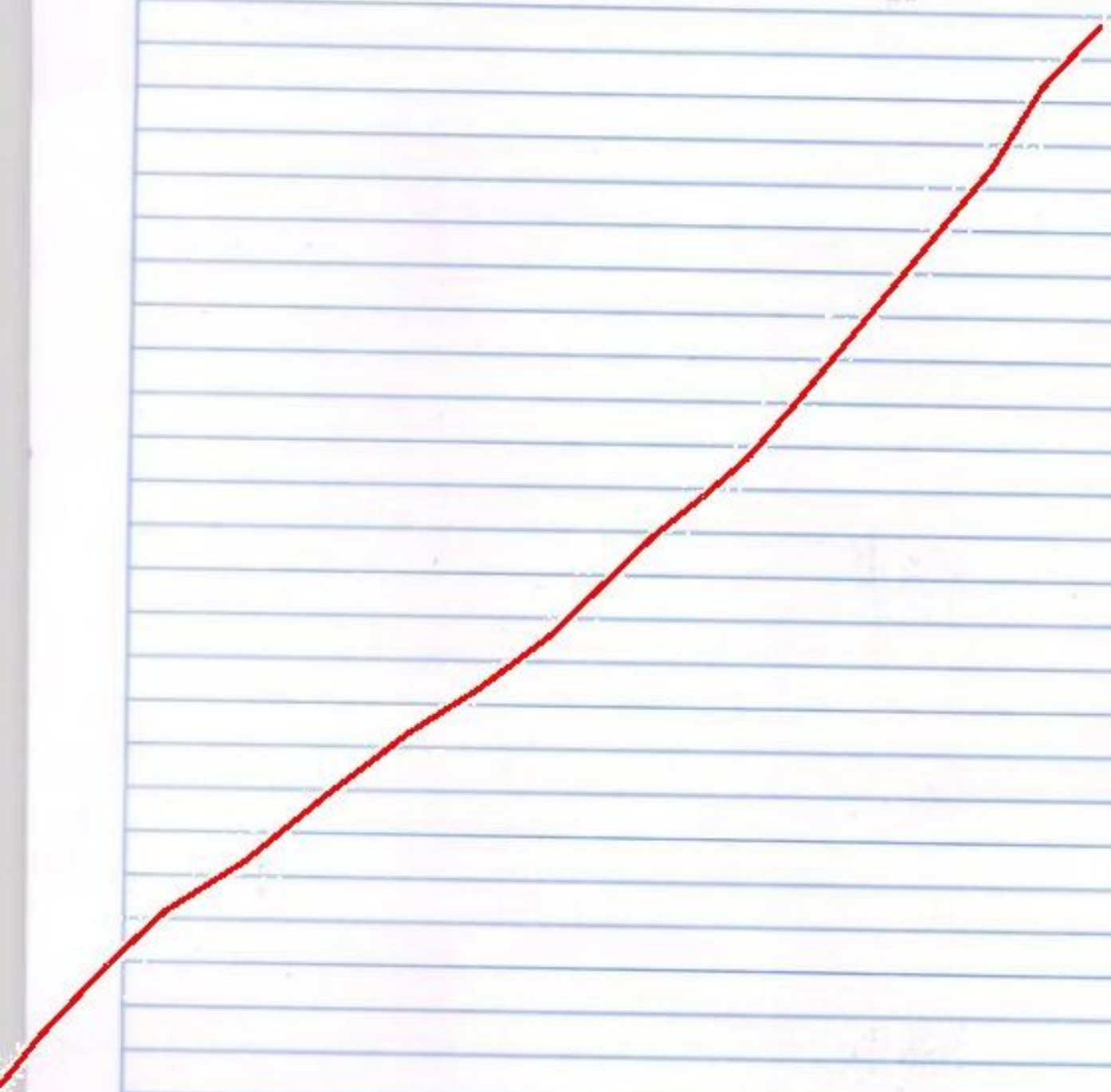

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion